Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 10, Print Issue 1 - 2025, Pg. No. 9-11
Peer Reviewed Journal

Review Article

योसानों अकीको की कविता और मातृत्व का नारीवादी दृष्टिकोण

Shweta Arora

Department of Japanese Studies, National University Singapore, Singapore
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202502

I N F O

E-mail Id:
shwetaarora376@u-nus-edu
Orcid Id:
https://orcid org/0009-0008-4029-0563

Date of Submission: 2025-04-02
Date of Acceptance: 2025-05-06

सारांश

योसानों अकीको (1878-1942) आधुनिक जापानी साहित्य की एक प्रसिद्ध रचयिता थीं, जिन्हें विशेष रूप से उनकी कविता के लिए जाना जाता है। यद्यपि उनकी गद्य रचनाओं और राजनीतिक विचारों से युक्त निबंधों में महिलाओं के अनुभवों की गहन समझ दिखाई देती है।यह लेख अकीको की कविताकृ दाइइचि नो जिन्त्सू दृ ("पहली प्रसव पीड़ा" 1915)कृमें प्रसव संबंधी विशय पर केंद्रित है। अकीको ने प्रसव को युद्ध या सार्वजनिक जीवन में पुरुषों द्वारा किए गए बलिदान के समकक्ष बताया, और इसके सामाजिक व राजनीतिक महत्व को रेखांकित किया। उनके लेखन ने बीसवीं सदी की जापान में व्याप्त उन वर्जनाओं को चुनौती दी।जहाँ महिलाओं के दर्द और आत्म–अभिव्यक्ति को दबाया जाता था। अकीको ने प्रसव के शारीरिक और भावनात्मक सत्य को स्वर देकर महिलाओं की आवाज को साहित्यिक और राजनीतिक विमर्श में स्थान दिलाया। प्रस्तुत कविता साहित्य व समाज दोनों में महिलाओं की सक्रिय भूमिका को स्थापित करती है।

मुख्य शब्द: जापानी नारीवादी साहित्य, योसानों अकीको, साहित्य में प्रसव, मातृत्व

परिचय - योसानों अकीको: नारीवादी कवयित्री

योसानों अकीको (1878-1942) को आधुनिक जापानी साहित्य में प्रारंभिक और सर्वाधिक प्रभावशाली नारीवादी स्वरों में से एक माना जाता है (अराना 2007, 483)। उनका विपुल साहित्यिक जीवन जापान के तीन महत्वपूर्ण युगोंकृमेइजी (1868-1912), ताइषो (1912-1926), और षोवा (1926-1989)कृतक फैला रहा। उनका बहुआयामी लेखन आज भी विविध प्रकार के पाठकों को आकर्शित करता है। अपने जीवनकाल में अकीको ने चौबीस कविता–संग्रह, पंद्रह निबंध–संग्रह और दो कथा–संग्रह प्रकाशित किए, जिनमें कुमो नो इरोइरो ("बादलों की विविधता", लघु कथा–संग्रह) और अकारुमि ए ("प्रकाश की ओर", पूर्ण लंबाई उपन्यास) शामिल हैं। हालाँकि अकीको मुख्य रूप से अपने प्रसिद्ध कविता–संग्रह मिदारेगामी ("उलझे बाल", 1901) और बोसई होगो रोंसो ("मातृत्व की सुरक्षा पर विवाद", 1916-1919) जैसे महिलाओं के संघर्शों पर केंद्रित निबंधों के लिए जानी जाती हैं, पर उनकी वैष्विक स्तर पर व्यापक आलोचनात्मक प्रषंसा हुई है। जनीन बाइचमैन (2002), लीथ मॉर्टन (2014), अमांडा सीमन (2016), वीरा मैकी (2003), स्टीव रैब्सन (1991), जोशुआ फोगेल (2001), नोरिको होरिगुची (2012) जैसे विद्वानों ने अकीको की कविताओं में लिंग, पहचान, मातृत्व, युद्ध और साम्राज्यवाद के विशयों की गहरी विवेचना की है। विशेष रूप से लॉरेल राप्लिका रॉड और रेबेका कोपलैंड ने स्त्री लेखन में उनके योगदान की सूक्ष्म समझ प्रदान की है।[1,2]

मातृत्व का राजनीतिक प्रतिरोध: अकीको का प्रसव–काव्य

यह लेख विशेष रूप से अकीको की कविताओं में प्रसव के विशय पर केंद्रित है- एक ऐसा विशय जो अत्यंत व्यक्तिगत होते हुए भी गहरी राजनीतिक महत्ता रखता है। स्वयं अकीको के तेरह बच्चे हुए थे, जिनमें से ग्यारह जीवित रहे। इसलिए प्रसव पर टिप्पणी करने के लिए वे निःसंदेह एक अत्यंत प्रामाणिक और अनुभव–संपन्न लेखिका थीं।उनकी इस संदर्भ में सर्वाधिक चर्चित रचनाओं में उबुया मोनोगातारी ("प्रसव की कथाएँ", 1909) दाइइचि नो जिन्त्सू दृ ("पहली प्रसव पीड़ा" 1915) प्रमुख है, जिसमें वे "पुरुषों के प्रति घृणा" जैसे भावों को व्यक्त करती हैं। हालाँकि, विद्वान ऐसी अभिव्यक्तियों की शाब्दिक व्याख्या से बचने की सलाह देते हैं। उदाहरण के लिए, वीरा मैकी (2003) मानती हैं कि अकीको का लेखन वास्तव में बीसवीं सदी के आरंभिक जापान में प्रेम और मातृत्व के मूल्य और उसकी कीमत को रेखांकित करने का एक प्रयास था। अकीको

Copyright (c) 2025: Author(s). Published by Advanced Research Publications

प्रसव के संघर्शों को युद्ध, शिक्षा या राष्ट्रसेवा में पुरुषों द्वारा दिए गए बलिदानों के समान बताकर, मातृत्व के सामाजिक एवं राजनीतिक महत्व को स्थापित करती हैं (मैकी 2003, 53)। इस प्रकार, अकीको का प्रसव–चित्रण स्त्रीवादी साहित्यिक प्रतिरोध का साहसिक उदाहरण बनता है। मॉर्टन (2014) के अनुसार, अकीको के युग में प्रसव जैसे विशयों पर लिखना वर्जित था। इससे जुड़े शारीरिक कष्टों और मानसिक संघर्षों को या तो दबा दिया जाता था या रोमांटिक रंग दे दिया जाता था। इन अनुभवों को खुलकर लिखते हुए अकीको न केवल सामाजिक रूढ़ियों को चुनौती देती हैं, बल्कि उन महिलाओं की आवाज भी बनती हैं जो स्वयं लिखने में असमर्थ थीं। उनकी कविता जोर देती है कि प्रसव जैसा विषय मात्र घरेलू या व्यक्तिगत न होकर, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दा भी है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि "पुरुषों के प्रति घृणा" वास्तव में व्यापक पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जिसमें स्त्रियों की अभिव्यक्ति को सीमित करने वाला राज्य भी शामिल है, के प्रति आलोचना है। मॉर्टन (2014) के अनुसार, अकीको के लिए प्रसव महज जैविक घटना नहीं, बल्कि गहन राजनीतिक कार्रवाई थी। प्रसव के अनुभवों की सच्चाई का वर्णन कर, वे राष्ट्रीय विमर्श की उस परंपरा को चुनौती देती हैं जिसने महिलाओं की आवाजों को गंभीर साहित्यिक एवं राजनीतिक चर्चाओं से बाहर रखा था।[3,4]

निष्कर्ष:'पहली प्रसव पीड़ा': नारीवादी प्रतिरोध और भारतीय पाठकों में उसकी प्रतिध्वनि

अंततः, योसानों अकीको की प्रसव संबंधी कविता केवल आत्मकथात्मक नहीं है- यह महिलाओं के जीवन के उन मौन पक्षों को पुनः स्थापित करती है जिन्हें लंबे समय तक उपेक्षित रखा गया था। अपनी साहसपूर्ण कल्पनाओं और स्पष्ट अभिव्यक्तियों के माध्यम से, अकीको साहित्यिक और सामाजिक सीमाओं को चुनौती देती हैं। उनका लेखन नारीवादी साहित्यिक इतिहास में महत्त्वपूर्ण योगदान है, जो यह दर्शाता है कि कविता सत्ता–संरचनाओं को चुनौती देने और स्त्री अनुभवों की आवाज बनने का शक्तिशाली माध्यम है। यही विशेषताएँ योसानो अकीको की कविता "पहली प्रसव पीड़ा" (1915) को हिंदी और भारतीय पाठकों के लिए अत्यंत आकर्शक बनाती हैं। जन्म जैसी सार्वभौमिक अनुभूति का सशक्त चित्रण, शारीरिक पीड़ा और अस्तित्वगत एकांत का ईमानदार प्रस्तुतीकरण भारतीय संस्कृति में मातृत्व के प्रति आदर और संघर्श की अवधारणाओं से गहरे मेल खाते हैं। साथ ही, इस कविता की सरल, किंतु गहन भावनात्मक शैली हिंदी गद्य–काव्य और आधुनिक भारतीय साहित्यिक प्रवृत्तियों के सौंदर्य–बोध के अनुरूप है, जिससे यह कविता पारंपरिक तथा समकालीन दोनों प्रकार के पाठकों को गहराई से प्रभावित करने में सक्षम है।[5,9]

दाइइचि नो जिन्त्सू (1915): 'प्रथम प्रसव पीड़ा' का हिंदी अनुवाद

आज मैं प्रसव पीड़ा से त्रस्त,
तन मन से पूर्ण बीमार।
नयन उन्मीलित, अव्यक्त शब्द,
लेटी हूँ बिस्तर पर ।
स्वयं से प्रश्न, ऐसा क्यूँ?
कई बार मत्यु को निकट से देखा है
पीड़ा,रक्त,चीखों की अभ्यस्त,
फिर भी असहनीय भय चिंता से कंपित मेरा मन ।
एक युवा डाक्टर की दिलासा,
जननी की दुख सुख मिश्रित अनुभूति का एहसास!
वह मुझसे अधिक कैसे जान सकता है?
वह मेरी पीड़ा का अनुमान लगाने में सर्वथा असमर्थ ।
ज्ञान वास्तविक नहीं होता,
अनुभव भी केवल अतीत की चीज है।
कृपया, सब चुप रहें।
दर्शक बने रहें, बस पास बैठे रहें।
मैं अकेली हूँ-
स्वर्ग और धरती के बीच, सिर्फ मैं।
मैं होंठ भींचे,
अपनी ही असहायता के क्षण की प्रतीक्षा करती हूँ।
जन्म देना, इस समय,
मेरे भीतर से फट कर निकलने वाली
एकमात्र सच्ची सृजन क्रिया है-
जिसमें अब न हाँ की जगह है, न ना की।
प्रथम प्रसव पीड़ा का आरंभ!
दिनकर का श्यामल, धूमिल हो जाना
जन जीवन पुनः नीरव शांत
मेरा एकाकीपन पुनः पूर्ववत् [10–12]

निष्कर्ष

योसानों अकीको की कविता त्र्दाइइचि नो जिन्त्सू÷ ("प्रथम प्रसव पीड़ा") मातृत्व के अनुभव को साहित्यिक और राजनीतिक दोनों धरातलों पर पुनः परिभाशित करती है। यह रचना मात्र एक आत्मकथात्मक क्षण का चित्रण नहीं, बल्कि पितृसत्तात्मक समाज की उस चुप्पी को तोड़ने का प्रयास है, जिसमें स्त्रियों के अनुभवोंकृ विशेष रूप से शारीरिक पीड़ा और मातृत्वकृको या तो रोमांटिक बना दिया गया या पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया गया। अकीको ने न केवल अपने व्यक्तिगत अनुभवों को शब्द दिए, बल्कि उन्हें सामाजिक विमर्श का विशय भी बनाया।

उनकी कविताएँ यह स्पष्ट करती हैं कि मातृत्व न केवल जैविक सत्य है, बल्कि एक गहरे अस्तित्वगत और राजनीतिक प्रतिरोध

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202502

का रूप भी है। स्त्रियों द्वारा झेले गए शारीरिक संघर्षों को युद्ध के समकक्ष मानना, एक ऐसी साहित्यिक क्रांति थी जो उस समय की सामाजिक सीमाओं को तोड़ने का कार्य करती है। अकीको की कविताएँ मातृत्व की जटिलता, स्त्री शरीर की हमदबल और अनुभव की वैधता को प्रतिष्ठित करती हैं।

भारतीय साहित्यिक परंपरा में जहाँ मातृत्व को पवित्रता और त्याग के प्रतीक के रूप में देखा गया है, वहाँ अकीको का लेखन एक जरूरी आलोचनात्मक दृश्टिकोण प्रस्तुत करता हैकृजो मातृत्व को केवल आदर्ष नहीं, बल्कि एक जीवंत, संघर्षशील और बोलने में सक्षम अनुभव के रूप में स्वीकार करता है। यह दृश्टिकोण हिंदी और भारतीय साहित्य के लिए अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह हमें स्त्री अनुभव की बहुआयामीता को देखने की एक नई दृष्टि प्रदान करता है।

इस प्रकार, योसानों अकीको की प्रसव–कविता केवल जापानी नारीवादी आंदोलन की प्रतिनिधि नहीं, बल्कि वैश्विक स्त्रीलेखन की उस परंपरा की प्रतीक है जो अनुभव, आत्मा और सामाजिक न्याय के बीच पुल बनाती है। उनके लेखन से यह स्पष्ट होता है कि कविता न केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति है, बल्कि प्रतिरोध और पुनराविष्कार का एक सशक्त औजार भी है।

संदर्भ सूची

1. इत्सुमी, कुमी. शिनपान ह्योदेन योसानो हीरोशी अकीको: ताइशो–हेन [ताइशो साहित्य संकलन: योसानो हीरोशी और अकीको] टोक्यो: यागिशोतन, 2009.
2. ओता, नोबोरु. निहोन किंदई तांका–शी नो कोचिकु: अकीको, ताकुबोकु, याइचि, शिगेयोशी और सामियो [आधुनिक जापानी तांका कविता का निर्माण: अकीको, ताकुबोकु, याइचि, शिगेयोशी और सामियो] टोक्यो: यागिशोतन, 2006.
3. कोपलैंड, रेबेका एल. लॉस्ट लीव्स: वीमेन राइटर्स ऑफ मेइजी जापान. होनोलूलू: यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, 2000.
4. सीमन, अमांडा सी. राइटिंग प्रेगनेंसी इन लो–फर्टिलिटी जापान. होनोलूलू: यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, 2016.
5. फॉगल, जोशुआ ए. ट्रैवल्स इन मंचूरिया एंड मंगोलिया: अ फेमिनिस्ट पोएट फ्रॉम जापान एनकाउंटर्ज प्रीवार चाइना / योसानो अकीकोय अनुवाद: जोशुआ ए. फॉगल. न्यू यॉर्क: कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस, 2001.
6. मैकी, वीरा सी. फेमिनिज्म इन मॉडर्न जापान: सिटिजनशिप, एम्बॉडिमेंट, एंड सेक्शुअलिटी. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2003.
7. योसानो, अकीको. तेइहोन योसानो अकीको जेन्शू. खंड 9-10, कोडंशा, 1980.
8. रैब्सन, स्टीव. "योसानो अकीको ऑन वॉर: टू गिव वन'स लाइफ ऑर नॉट - अ क्वेश्चन ऑफ विच वॉर." द जर्नल ऑफ द एसोसिएशन ऑफ टीचर्स ऑफ जापानीज, खंड 25, संख्या 1, 1991, पृ. 45-74.
9. रॉड, लॉरेल रैस्प्लिका. "योसानो अकीको एंड द ताइशो डिबेट ओवर द 'न्यू वूमन'." रिक्रिएटिंग जापानीज वीमेन, 1600–1945, संपादक गेल ली बर्नस्टीन, बर्कले: यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1991, पृ. 175दृ198.
10. लेथ, मॉर्टन. "योसानो अकीको एंड द कंस्ट्रक्शन ऑफ फीमेल आइडेंटिटी इन मॉडर्न जापान." गेन्गोबुंका रोंसो, खंड 19, 2014, पृ. 31दृ51.
11. होरिगुची, नोरिको जे. वीमेन एड्रिफ्ट: द लिटरेचर ऑफ जापान्स इम्पीरियल बॉडी. मिनियापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, 2012.
12. बीचमैन, जेनिन. एम्ब्रेसिंग द फायरबर्ड: योसानो अकीको एंड द बर्थ ऑफ द फीमेल वॉइस इन मॉडर्न जापानीज पोएट्री. होनोलूलू: यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई प्रेस, 2002.

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202502